

रेवा तू बोल-रेवा-रेवा बोल ॥2॥

तुम हो पाप विनाशनी रेवा ^{SSSS} मर्क ^{SSS}

हिय के द्वार खोल.... रेवा तू बोल....

भूरे मगर पे आसन, तेरी है मैया
पार लगा दो रेवा- सबकी मैया

तेरी महिमा निराली रेवा ^{SSSS} मर्क ^{SSSS}

तू है अनमोल-----

रेवा तू बोल....

बड़ी आश लेके-तेरे चरणों में आया

मिलती रहे ओ रेवा-तेरी ही दया

तुम हो भव की तरैया मैया ^{SSSS} मर्क ^{SSS}

बोलें मीठे बोल-----

रेवा तू बोल....

दास "श्री बाबा श्री" की रेवा बिगड़ी क्ना दो
भूले हैं राहें जो भी-उनको दिखा दो

रो-रो इनको पुकारो-पगले ^{SSSS} हो ^{SSSS}

बहा आँसू गोल-

रेवा तू बोल....